कुट्टनाड की एक गाथा

एडत्तुआ के चिरयिल परिवार की कहानी

अप्पच्चन सी. टी. वर्की से कुंजोमाचन और अम्मिणिकुट्टी तक:
केरल के बैकवॉटर की एक सच्ची पारिवारिक कहानी, बच्चों के लिए

टेरेसा रानी पॉल की स्मृति-कथा और चिरयिल परिवार-पुस्तक पर आधारित

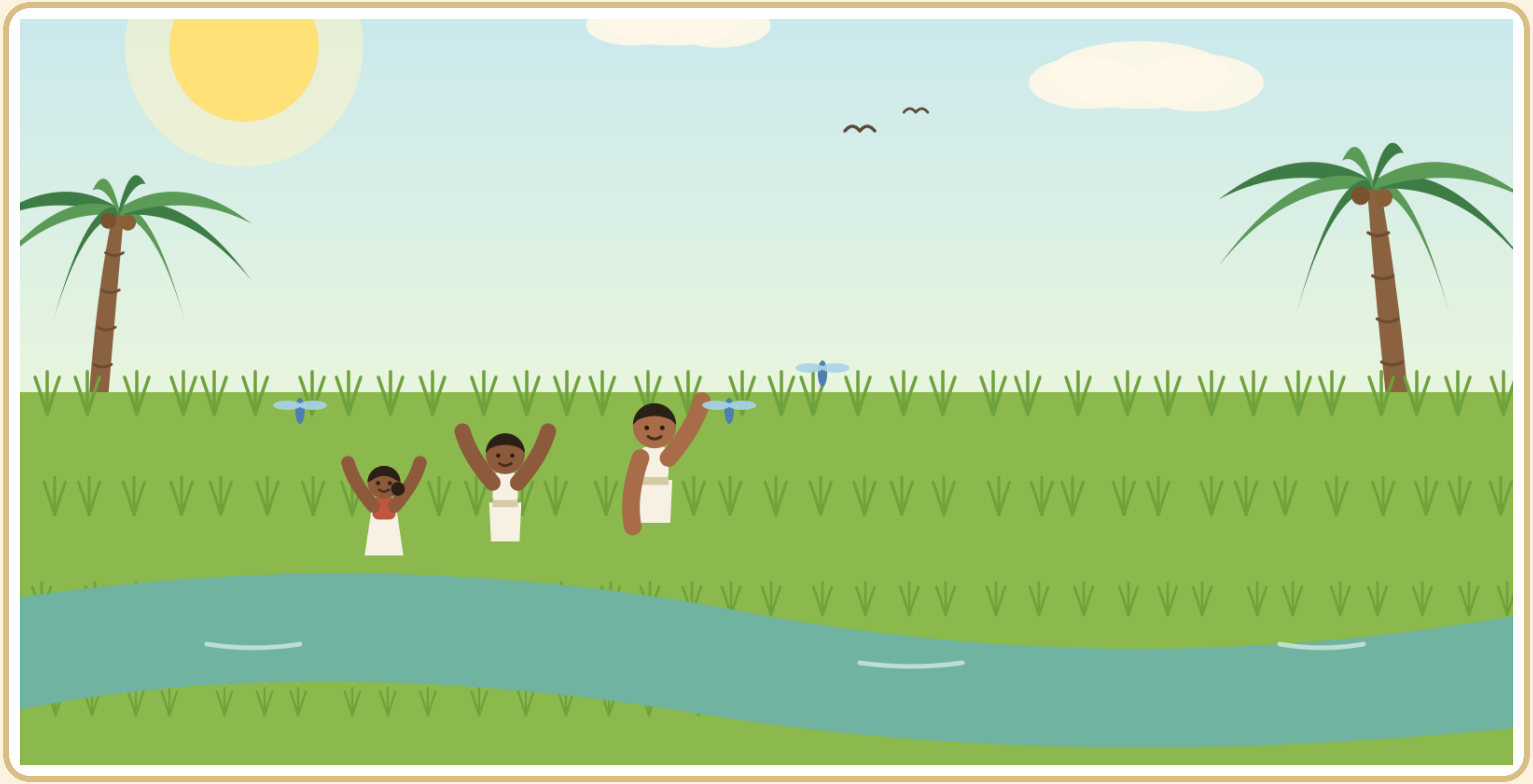

नमस्ते, मेरे बच्चे!

तुमने कभी मेरा चेहरा नहीं देखा, न मेरी आवाज़ सुनी। पर बहुत-बहुत पहले, मैं भी तुम्हारी तरह एक बच्चा था! मेरा नाम वर्की है, चिरयिल परिवार का। मैं कुट्टनाड नाम की हरी-भरी, पानी से घिरी धरती पर बड़ा हुआ। हमारे पुरखे मीनचिल नदी के किनारे कुडमालूर से आए थे — पुराने चेम्बकश्शेरी राज्य से। तब न गाड़ियाँ थीं, न सड़कें, न चमकती स्क्रीनें। पानी, कीचड़ और दूर-दूर तक फैली हरियाली — यही हमारी दुनिया थी। मेरा भाई जैकब, बहन अन्नम्मा और मैं मुंडु घुटनों तक बाँधे, नंगे पाँव धान के खेतों में दौड़ते और व्याधपतंगों के पीछे भागते!

नए घर की नाव-यात्रा

मेरे पिता थॉमस वर्की बड़े समझदार थे। आसमान के काला होने से तीन दिन पहले ही वे बारिश सूँघ लेते थे! उन्होंने कहा, 'हम नई मिट्टी में जड़ें जमाएँगे।' परिवार ने बर्तन, औज़ार और बीज एक बड़ी लकड़ी की नाव — केट्टुवल्लम — में रखे और टेढ़ी-मेढ़ी नदियों में नाव खेते चले। छप-छप! सर-सर! वे पम्बा नदी के किनारे एडत्तुआ नाम के दलदली गाँव पहुँचे, जहाँ पिता ने उस बढ़ते गाँव का पहला और सबसे सुंदर घर बनाया। पीढ़ियों तक वही हमारे परिवार का घर रहा।

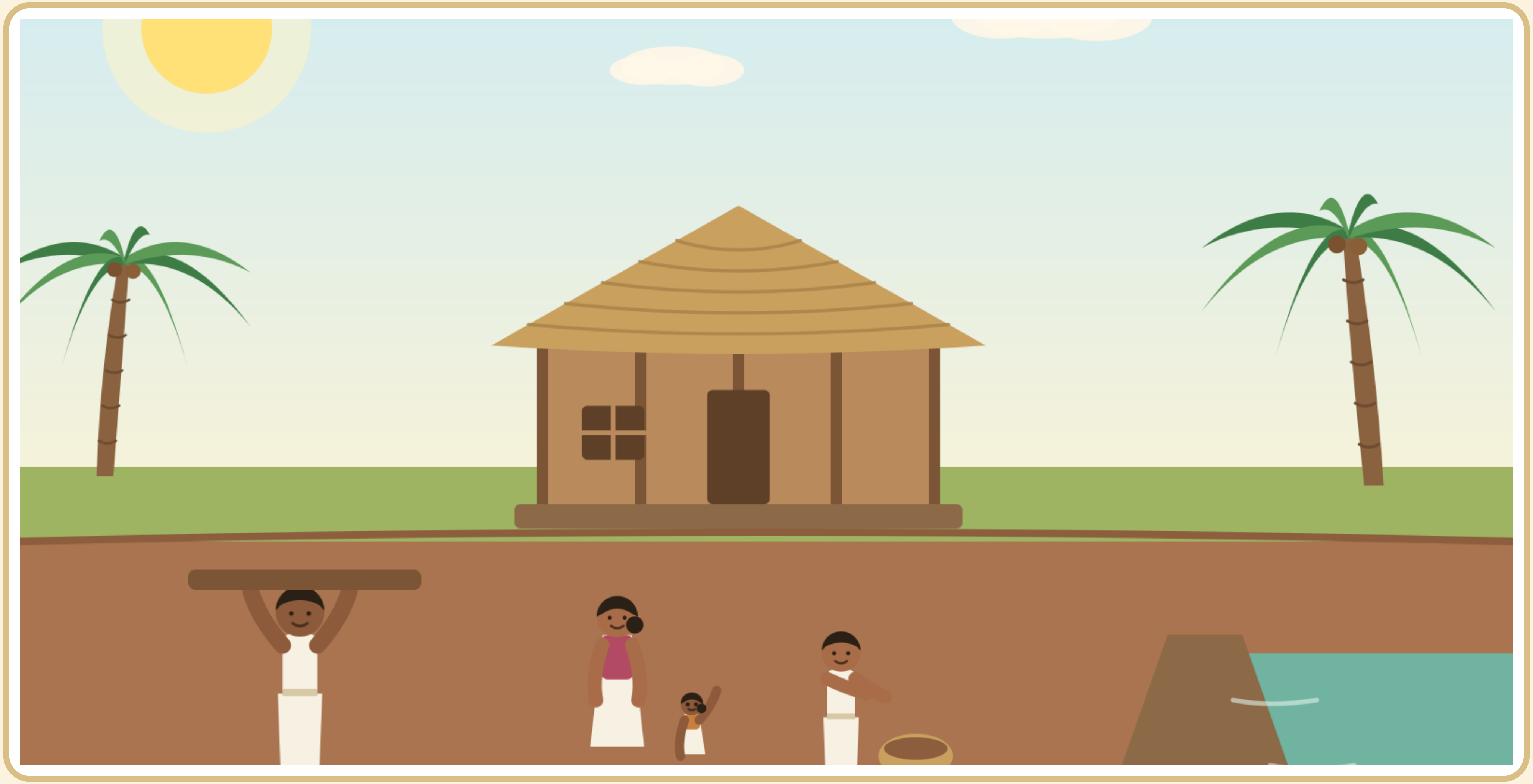

मिट्टी और प्यार से बना घर

घर बनाने में सबने हाथ बँटाया। पिता और बड़े भाई जैकब ने भारी लकड़ियाँ ढोईं और खेतों में पानी रोकने के लिए मिट्टी के बाँध — वरम्बु — बनाए। घर ऊँचे चबूतरे पर खड़ा था, ताकि बाढ़ उसे छू न सके। घर के भीतर हमने अर्रा बनाया — लकड़ी का मज़बूत, ऊँचा अनाज-घर, जहाँ अगली फ़सल तक सुनहरा धान सुरक्षित रहता। जैकब बड़े होकर शिक्षक और फिर हेडमास्टर बने; पूरा गाँव उनका आदर करता था। धीरे-धीरे जंगली दलदल धान के खेतों और नारियल के बाग़ों में बदल गया। हमने जड़ें जमा लीं!

रोसम्मा, हमारे घर की रानी

बड़ा होकर मैंने रोसम्मा से विवाह किया। वह सचमुच रानी थी! शोर मचाती मुर्गियाँ, दूध देती गायें, सूखता धान और एक-एक नारियल — सब पर उसकी नज़र रहती। उसकी बाज़ जैसी आँखों से कुछ नहीं बचता था! मैं खेतों में कड़ी मेहनत करता, और रोसम्मा चुपचाप भूखे पड़ोसियों तक दूध, अंडे और चावल पहुँचा देती। उसने कभी धन्यवाद तक नहीं चाहा। यही उसकी गुप्त दया थी — और यही हमेशा के लिए हमारे परिवार की रीति बन गई।

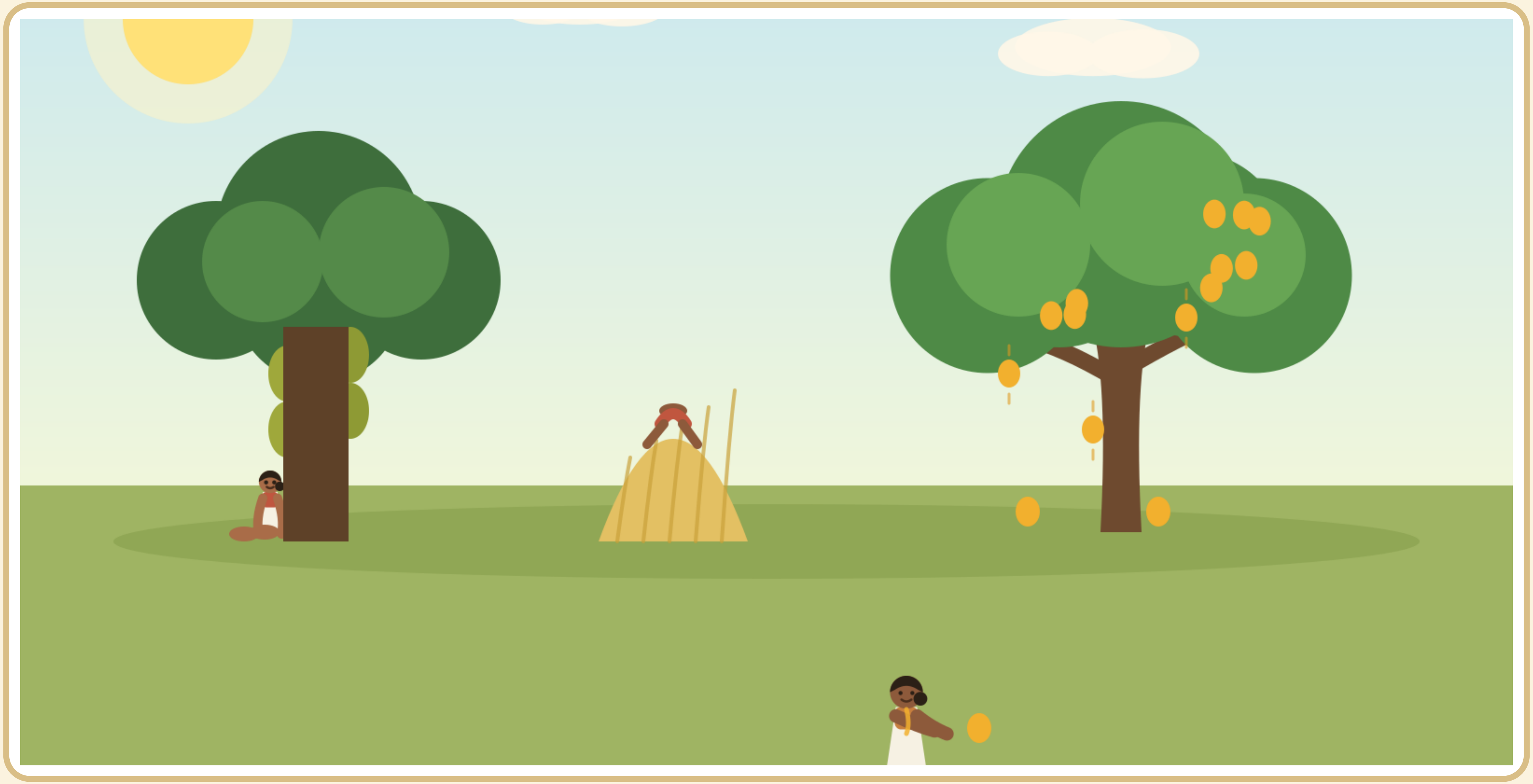

आम के पेड़ के नीचे मस्ती

हमारी बेटियाँ दोपहर भर छुपन-छुपाई खेलतीं! एक कटहल के पेड़ के पीछे छिपती — पक्का यक़ीन कि वह अदृश्य है, पर उसके कीचड़ भरे पाँव सबको दिखते! दूसरी नन्ही चुहिया की तरह घास के ढेर में सिर के बल कूद जाती! और जब शाम की हवा आम के पेड़ को हिलाती — धम! धम! धम! — सुनहरे आम बरस पड़ते। भूखी नन्ही शेरनियों की तरह लड़कियाँ उन पर झपटतीं और तब तक रस चूसतीं जब तक वह कोहनियों से न टपकने लगे।

शाम के दीये की कहानियाँ

तारे निकलते ही हम पीतल का दीपक — निलाविलक्कु — जलाते और चमकते फ़र्श पर पास-पास बैठ जाते। प्रार्थना के बाद मैं बच्चों को योआकिम और अन्ना की कहानी सुनाता — समुद्र पार का एक बूढ़ा जोड़ा, जिनकी कोई संतान न थी। वे प्रार्थना करते रहे, करते रहे, और परमेश्वर ने उन्हें मरियम नाम की बेटी दी — जो बड़ी होकर प्रभु यीशु की माँ बनी! उस रात रोसम्मा ने मुझसे धीरे से कहा: 'हम भी एक बेटे के लिए प्रार्थना करें। चलो, वल्लारपाडम में माता मरियम के तीर्थ चलें।'

पानी के ऊपर लंबा सफ़र

दो मज़बूत नाविकों के साथ हम केट्टुवल्लम में निकल पड़े। दिनों तक हमारी पूरी दुनिया बस छप-छप, सर-सर थी। रोसम्मा चावल, नमकीन मछली, केले के चिप्स और साफ़ पानी के घड़े साथ लाई थी। रात में हम नाव को पेड़ की जड़ों से बाँधते और झींगुरों का गीत सुनते हुए छोटे से तेल के दीये की रोशनी में सो जाते। जानते हो, मेरे बच्चे, वह द्वीप चमत्कारों के लिए मशहूर था? बहुत पहले, सन 1752 में, एक माँ और उसका शिशु तूफ़ानी समुद्र में गिर गए; वल्लारपाडम की माता ने एक पादरी को सपने भेजे — और आख़िर वे दोनों जीवित मिल गए!

समुद्र किनारे का सफ़ेद गिरजाघर

आख़िर हमने देखा — नीले-हरे पानी के किनारे चमकता वल्लारपाडम का सफ़ेद गिरजाघर। हम तपती रेत पर नंगे पाँव चले, और पूरे सात दिन हमने उपवास किया, घुटने टेके, दूर देशों से आए तीर्थयात्रियों के साथ प्रार्थना की। रोसम्मा ने हाथ जोड़कर माता मरियम से एक बेटा माँगा। फिर हमने मोमबत्तियाँ जलाईं, नाव में बैठे, और अपनी आशा एडत्तुआ तक ले आए।

सितंबर का चमत्कार

और स्वर्ग ने हमारी सुन ली! 8 सितंबर 1925 को — माता मरियम के जन्मदिवस के पर्व के ठीक दिन — हमारे घर में एक ज़ोरदार रोना गूँजा। वह कोई नरम-सी किलकारी नहीं थी; वह छत हिला देने वाली गर्जना थी! 'बेटा हुआ है, वर्की!' दाई ने पुकारा। 'हट्टा-कट्टा, तगड़ा बेटा!' मैं घुटनों पर गिर पड़ा और खुशी के आँसू बहाए। हमने उसका नाम थॉमस रखा; सब उसे प्यार से कुंजोमाचन बुलाते। कपड़े के झूले — थूक्कु थोट्टिल — में हम उसे झुलाते।

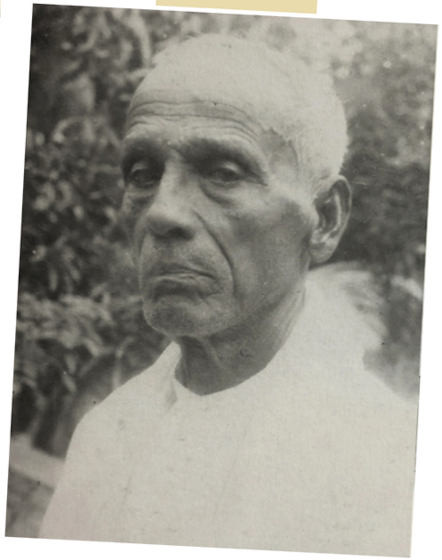

अप्पच्चन सी. टी. वर्की, हमेशा उजले सफ़ेद में

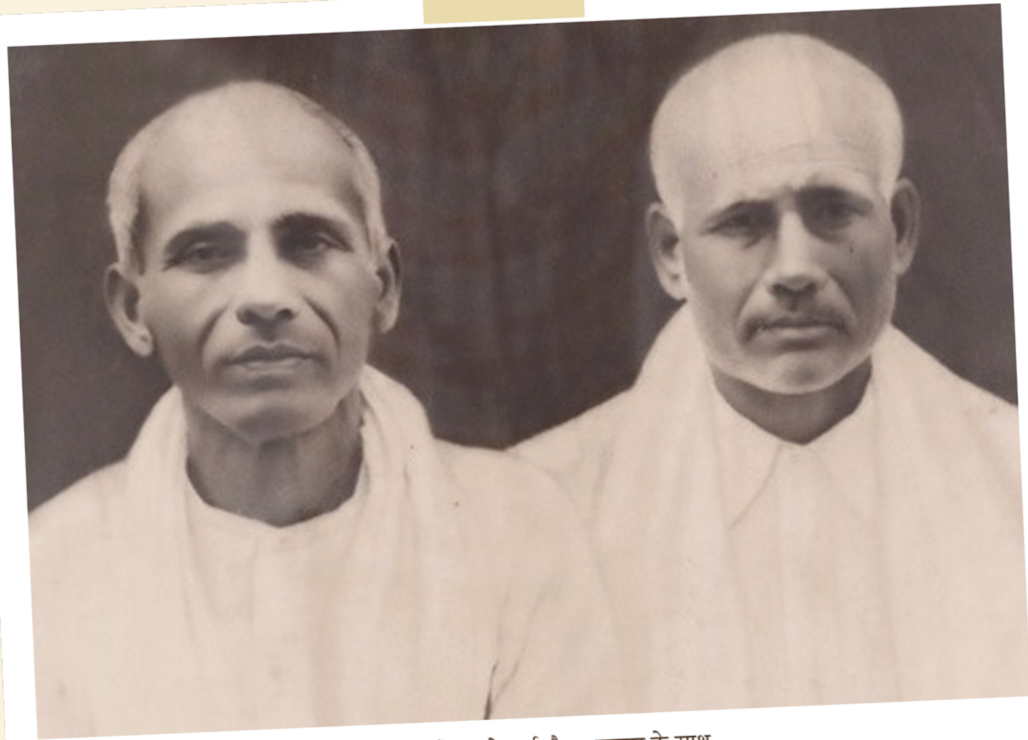

वर्की (बाएँ) अपने भाई जैकब मास्टर के साथ

असली अप्पच्चन वर्की

देखो मेरे बच्चे, असली तस्वीरों में मैं! मेरा जन्म 26 दिसंबर 1891 को एडत्तुआ में हुआ। मेरे पोते-पोतियाँ बताते हैं कि मैं हमेशा उजला-धुला सफ़ेद मुंडु पहनता था, और मेरे सारे कपड़े एक छोटे से लकड़ी के बक्से में समा जाते थे — मेरा मानना था कि बस उतना ही रखो जितनी सचमुच ज़रूरत हो। शाम के स्नान के बाद मुझसे आयुर्वेदिक तेल की सुगंध आती, और प्रार्थना के समय बच्चे उस जादुई ख़ुशबू के लिए मुझसे सटकर बैठते!

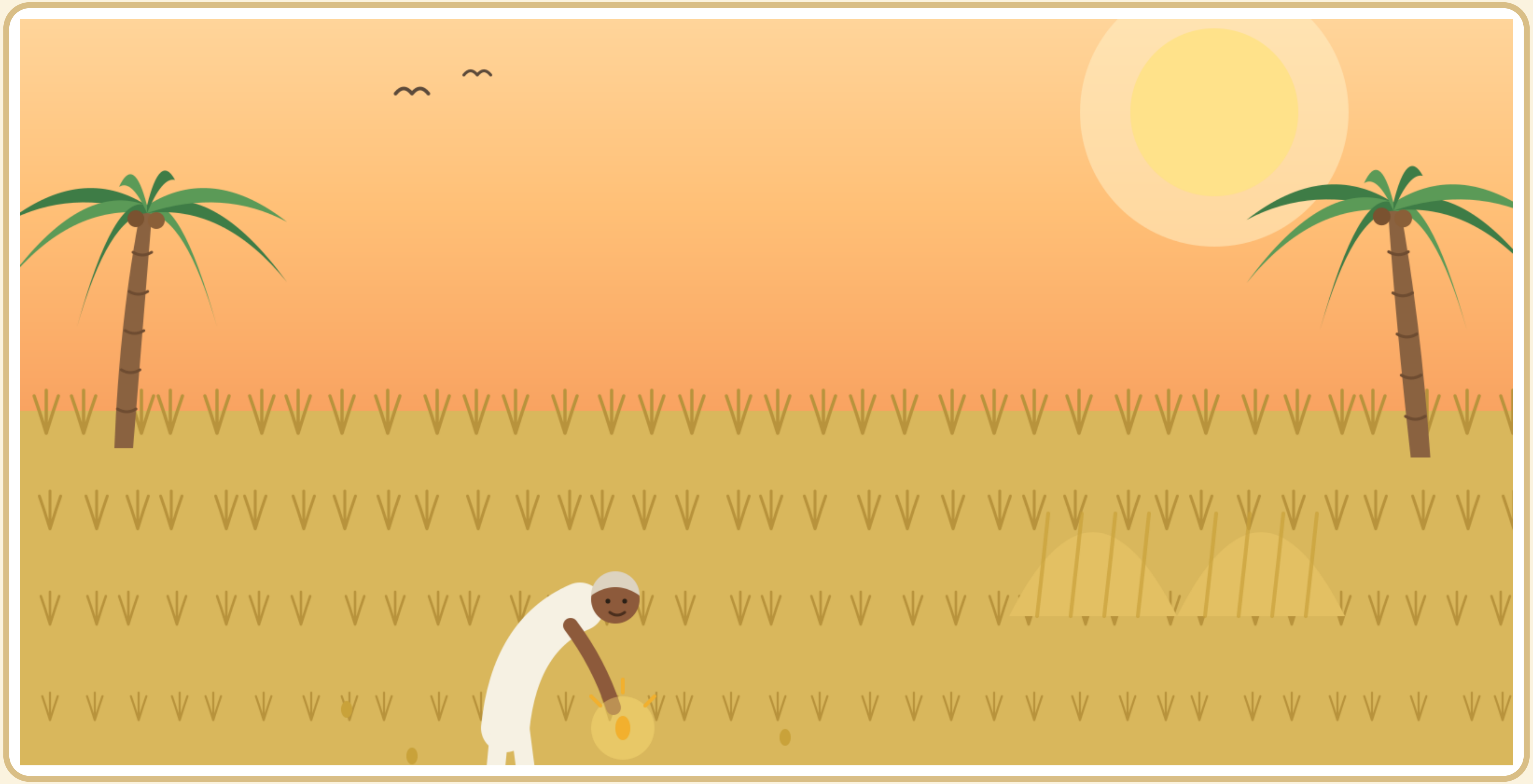

वह एक सुनहरा दाना

हर फ़सल कटने के बाद शाम को, सफ़ेद कपड़ों में मैं अपने खेतों का चक्कर लगाता और गिरा हुआ एक-एक दाना उठाता। पिता ने मुझे एक राज़ बताया था: 'हर खेत की विशालता में, अरबों दानों के बीच, एक सुनहरा दाना होता है। वह अच्छे दिन लाता है — उसे घर पहुँचना ही चाहिए!' इसीलिए हम छोटी-सी भी नेमत बर्बाद नहीं करते। मैंने यह बात अपने बेटे कुंजोमाचन को सिखाई; उसने अपने बच्चों को। और अब, मेरे बच्चे, मैं तुम्हें सिखा रहा हूँ।

नाव से कॉलेज जाने वाला लड़का

कुंजोमाचन होशियार और मज़बूत बना, और दूर तेवरा के सेक्रेड हार्ट कॉलेज में साहित्य पढ़ने गया। पर बिना सड़कों के कॉलेज कैसे पहुँचे? नाव से, और कैसे! सत्तर किलोमीटर की घुमावदार जल-यात्रा। नाव शाम सात बजे एडत्तुआ से चलती और अगली सुबह सात बजे पहुँचती — रात भर तारों के नीचे सरकती हुई। और उसकी गोद में सबसे क़ीमती चीज़ — माँ रोसम्मा का प्यार से बाँधा गरम खाना।

लेको अप्पच्चन और आधी रात का अजनबी

कुंजोमाचन बड़ा व्यापारी बना। वह नेवेली की खदानों से चमकते कोयले के टिकिये — लेको — एडत्तुआ लाया; घरों और अस्पतालों के लिए ईंधन से भरे ट्रक गरजते हुए आने लगे। पूरा गाँव उसे 'लेको अप्पच्चन' बुलाता! एक रात देर से घर लौटते हुए उसने ख़राब खड़ी कार के पास एक अजनबी को देखा। कुंजोमाचन ने गाड़ी रोकी और उसे अगले शहर तक छोड़ दिया। और जानते हो? वह अजनबी एक बड़ी सीमेंट कंपनी का प्रमुख निकला! आभार से भरकर उसने कुंजोमाचन को एक बड़ा नया कारोबार सौंपा। देखा मेरे बच्चे — भलाई हमेशा लौटकर आती है।

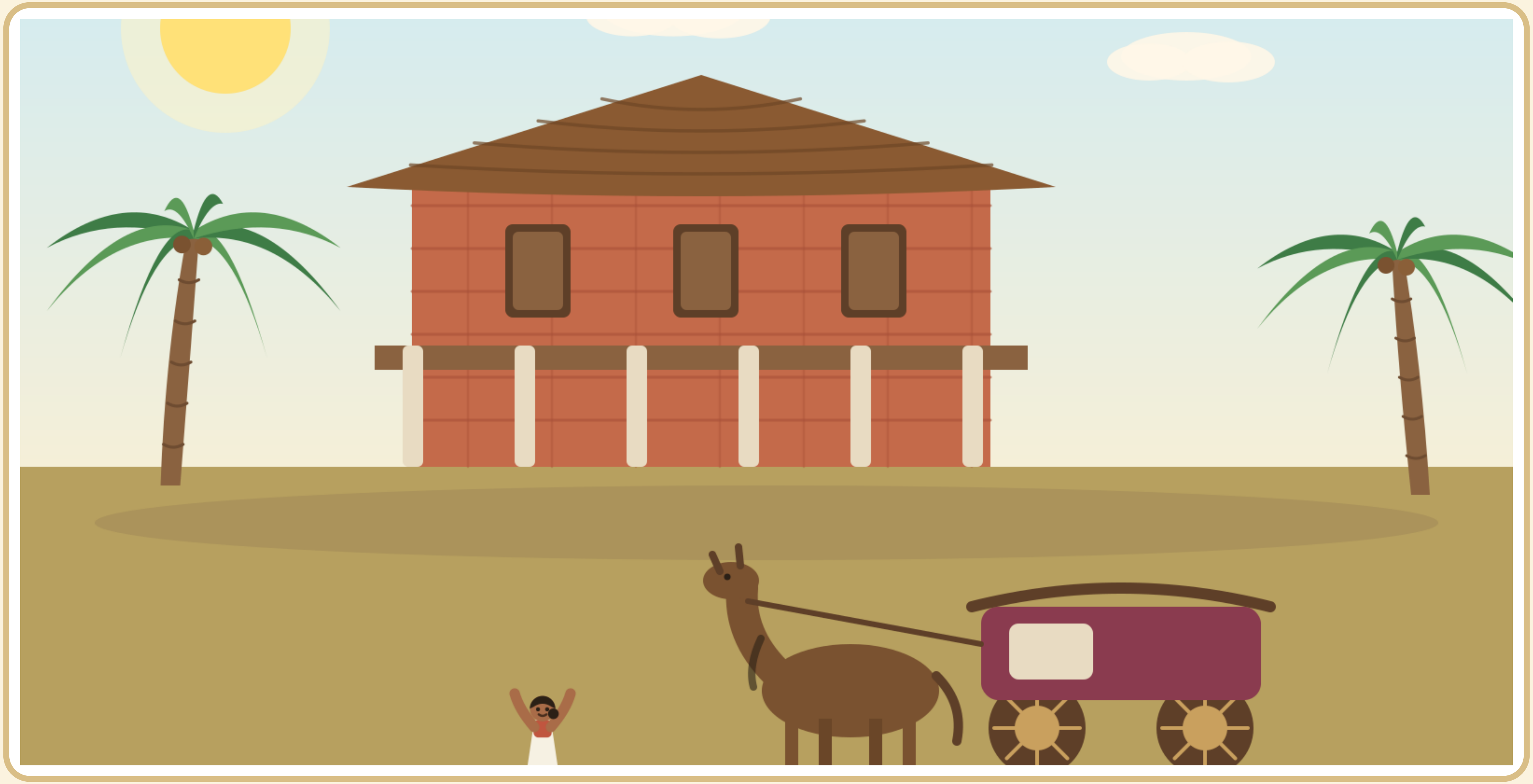

अम्मिणिकुट्टी नाम की नन्ही परी

दूर मावेलिक्कारा में एक बच्ची बड़ी हो रही थी। मथाई पणिक्कर की छह संतानों में सबसे छोटी अम्मिणी — सबकी अम्मिणिकुट्टी — का जन्म 10 दिसंबर 1933 को हुआ। परिवार का बड़ा घर लाल लैटेराइट पत्थरों से बना था, और वे घोड़ागाड़ियों में चलते थे! बाहर के भवन में शाही मालिश के लिए गर्म औषधीय तेलों से भरी लकड़ी की एक नाव तक थी — एण्णा-थोणी! उनके मामा थे महान आर्चबिशप मार ईवानियोस, जिन्हें पूरा केरल प्यार करता था।

कुंजोमाचन और अम्मिणिकुट्टी, विवाह का दिन, 1950

थॉमस वी. चिरयिल और अम्मिणी थॉमस

एक शादी और एक नाव-यात्रा

14 सितंबर 1950 को कुंजोमाचन और अम्मिणिकुट्टी का विवाह हुआ, और सड़कें इतनी सँकरी थीं कि नई दुल्हन मावेलिक्कारा से एडत्तुआ आई कुट्टनाड के अंदाज़ में — नाव से! राजकुमारी की तरह पली-बढ़ी होने पर भी अम्मिणिकुट्टी ने तुरंत काम सँभाल लिया। सुबह सबसे पहले उठती, रात में सबसे बाद में सोती — हर मुर्गी, हर गाय, हर दरवाज़े का ध्यान रखती। और जानते हो? उसने कभी शिकायत नहीं की। बल्कि हर दिन अपनी नेमतें गिनती रही।

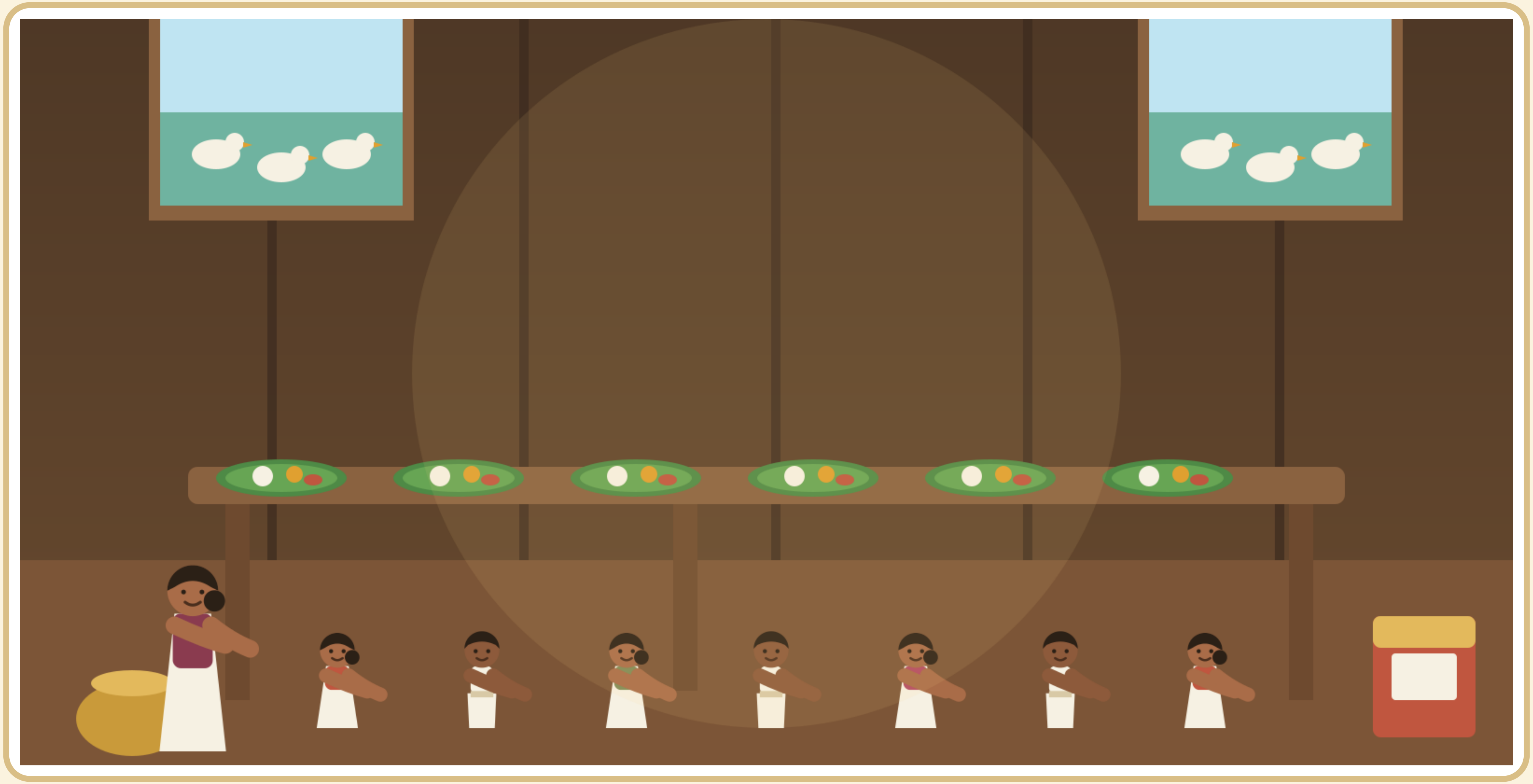

सबसे लंबी खाने की मेज़

घर का दिल था भोजन-कक्ष — चार मेज़ें जोड़ने जितनी लंबी एक मेज़! छुट्टियों से पहले मेरे बेटे की पत्नी अम्मिणी नहर पर दो सौ बत्तखें पालती — ताकि दावतों में किसी को कमी न हो! मेरा बेटा हर चीज़ ढेर में ख़रीदता — यहाँ तक कि ब्रिटानिया बिस्कुट के इतने बड़े डिब्बे कि बच्चे की कमर तक पहुँचें। तले के आख़िरी बिस्कुट निकालने के लिए नन्हों को सिर के बल डुबकी लगानी पड़ती! मछली, बत्तख़ और अपने ही खेतों के चावल के पहाड़ — उस मेज़ से कोई भूखा नहीं लौटा।

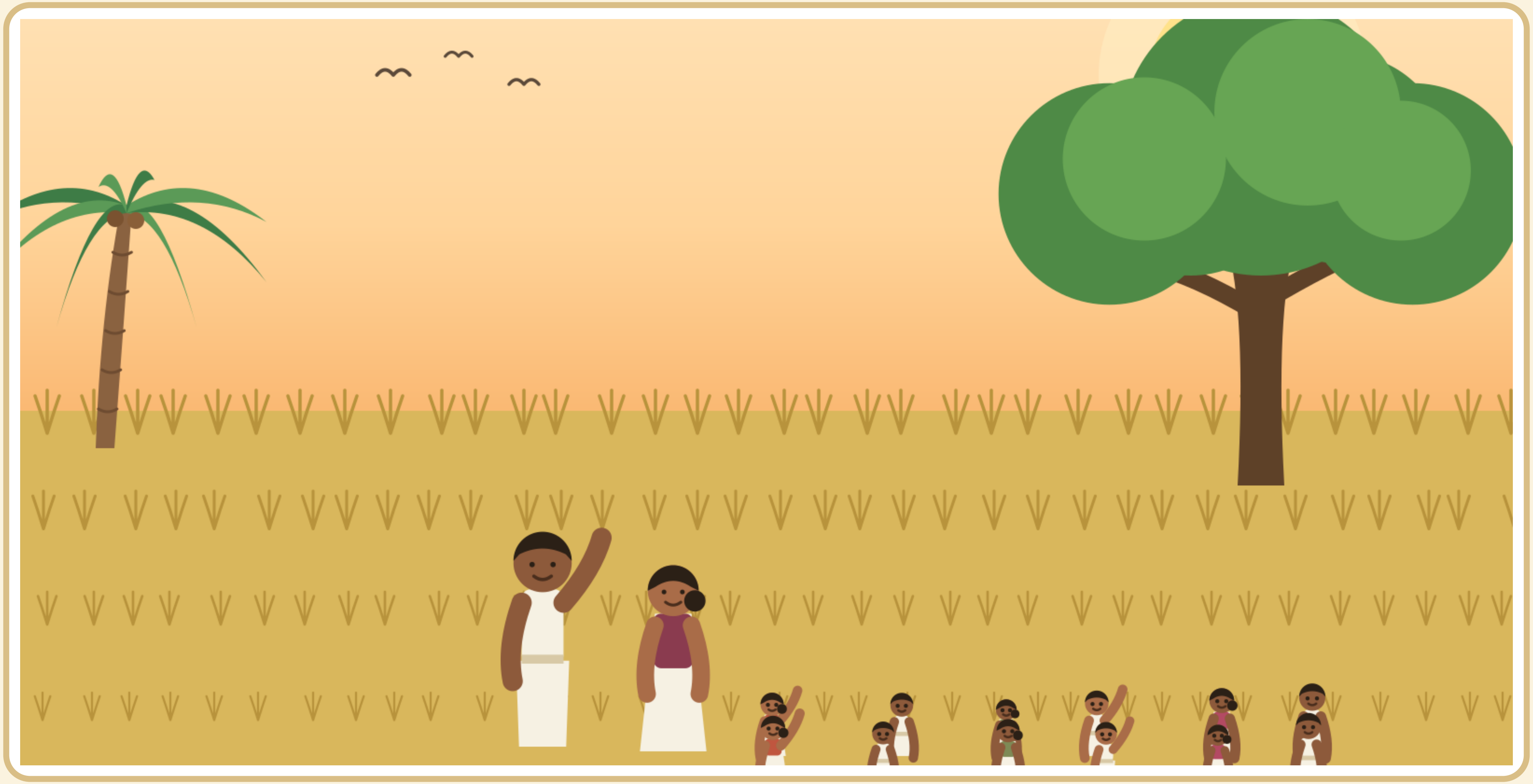

बारह बच्चे!

परमेश्वर ने कुंजोमाचन और अम्मिणिकुट्टी को बारह बच्चों का आशीर्वाद दिया — चार बेटियाँ और आठ बेटे! रानी, रोसम्मा, पुष्पम और कुसुमम; जॉर्ज, मैथ्यू, आइवन, जैकब, पॉल, आंटो, रोजन और जोजो। कपड़ा एक लंबे थान में आता; दर्ज़ी सबकी कमीज़ें सिलता; बच्चे बड़े होते तो वे छोटों को मिल जातीं। हर दिन मेरा बेटा उनसे अख़बार का संपादकीय सुंदर लिखाई में उतरवाता — ताकि अक्षर सुथरे हों और दिमाग़ तेज़। घर हँसी से ऐसा गूँजता जैसे शोर मचाते तोतों से भरा पेड़!

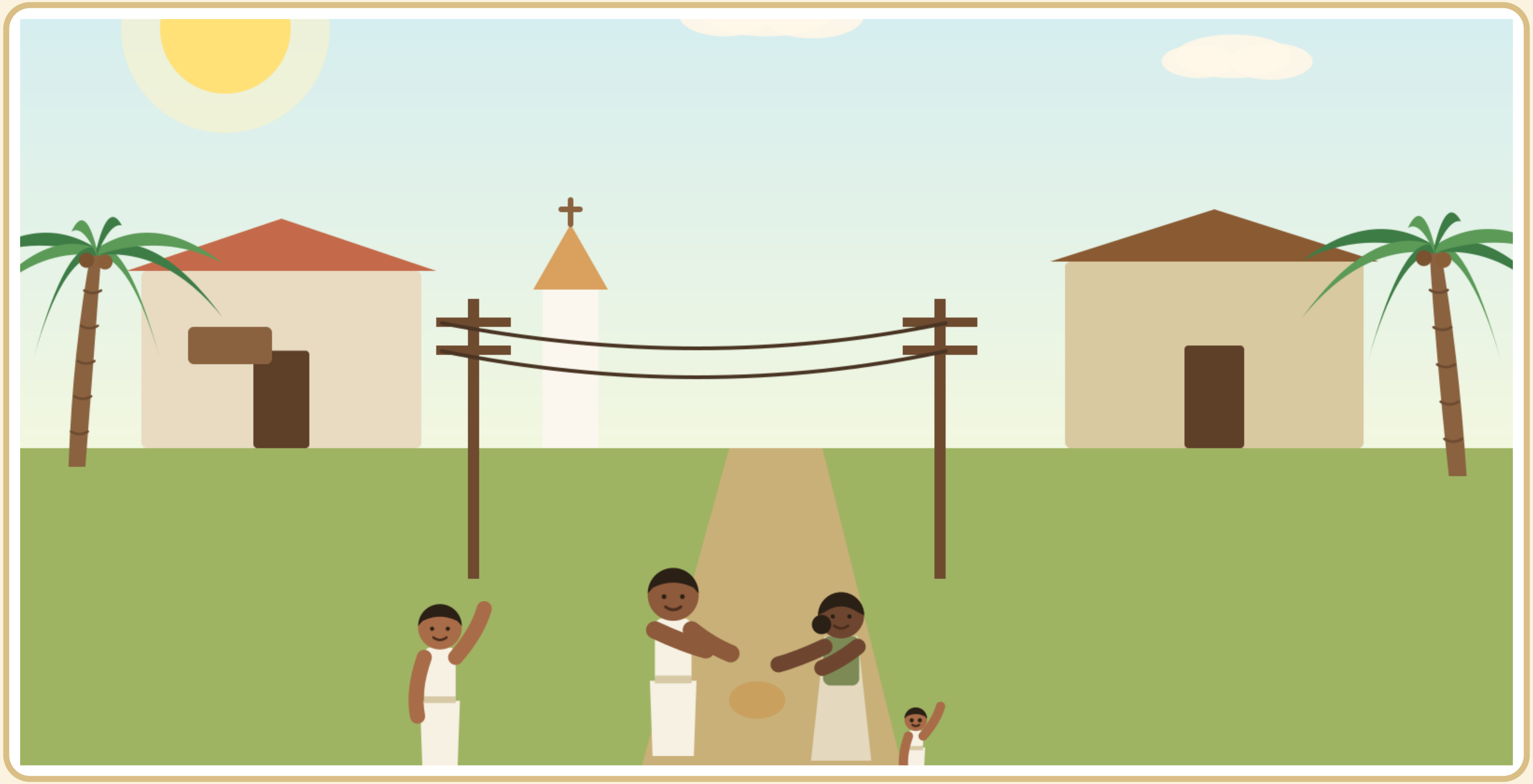

गाँव, जैसे अपना ही बच्चा

'गाँव उनके लिए अपने बच्चे जैसा था' — परिवार कुंजोमाचन के बारे में यही कहता है। उस घर से कोई ख़ाली हाथ नहीं लौटा। उन्होंने एडत्तुआ में बैंक लाने में मदद की; युवाओं को हुनर सिखाने के लिए प्रशिक्षण संस्थान शुरू किया; थाने के लिए ज़मीन दी; और जब गाँव को पहला टेलीफ़ोन एक्सचेंज पाने के लिए दस फ़ोन के ऑर्डर चाहिए थे, तो वे घर-घर गए जब तक दसों पूरे न हो गए! मेरी रोसम्मा और मेरी ही तरह, मेरे बेटे और अम्मिणी ने भी ग़रीबों में सबसे ग़रीब को दया और प्रेम से थामा।

अम्मिणिकुट्टी अपनी एक पड़पोती के साथ

ओणम पर पोते-पोतियाँ साथ-साथ

पोते-पोतियों की पूरी टोली!

बारह बच्चे बड़े हुए, उनके भी बच्चे हुए — छब्बीस पोते-पोतियाँ, और फिर पड़पोते-पड़पोतियाँ! हर गर्मी की छुट्टियों में वे दूर शहरों से आते — कोई-कोई दो पूरी रातें रेलगाड़ी में, खिड़की से धरती को और-और हरा होते देखते हुए। और स्टेशन पर खड़े मिलते मेरा बेटा और उसकी अम्मिणी — जिन्हें सारे बच्चे प्यार से अच्चन और अम्मच्ची बुलाते — बाँहें फैलाए, हर बच्चे को यह एहसास कराते कि वही पूरी सृष्टि का सबसे ख़ास इंसान है।

अब कहानी तुम्हारे हाथ में

मेरे बच्चे, मेरी हड्डियाँ एडत्तुआ की मिट्टी में विश्राम करती हैं, पर मेरी कहानी तुम्हारी रगों में बहती है। मुझसे और मेरी रोसम्मा से, कुंजोमाचन और अम्मिणिकुट्टी तक, उनके बारह बच्चों, छब्बीस पोते-पोतियों और उनके बाद आए हर नन्हें तक — हम एक ही लंबी, अटूट नदी हैं। इसलिए जब दुनिया बहुत शोर करे, तो अपनी चमकती स्क्रीन पल भर के लिए रख दो। पाँवों के नीचे की मिट्टी को महसूस करो। वह एक सुनहरा दाना ढूँढो। और याद रखो — वही कृपा तुम्हें भी थामे है, जिसने बरसों पहले हमें थामा था।

ढेर सारे प्यार के साथ, तुम्हारा अप्पच्चन — सी. टी. वर्की

वे वचन जिनसे हमारा परिवार जिया

'स्वर्ग मेरा सिंहासन है और पृथ्वी मेरे चरणों की चौकी... पर मैं उसी पर दृष्टि करूँगा जो दीन और खेदित मन का है, और मेरे वचन सुनकर थरथराता है।'

— यशायाह 66:1–2

'हर खेत की विशालता में, अरबों दानों के बीच, एक सुनहरा दाना होता है। वह अच्छे दिनों का अग्रदूत है — उसे घर पहुँचना ही चाहिए।'

— पिता से संतान तक चली आई चिरयिल परिवार की सीख

थॉमस वर्की और मरियाम्मा, सी. टी. वर्की और रोसम्मा, कुंजोमाचन और अम्मिणिकुट्टी, उनके बारह बच्चों, छब्बीस पोते-पोतियों — और कहानी को आगे ले जाने वाले हर नन्हें की — प्रेमभरी स्मृति में।